REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2021

सामाजिक आर्थिक गतिविधियाँ सीकर जिले का अध्ययन

श्यामसुन्दर वर्मा

प्रस्तावना

कृषि ऐसी जिवन पद्धति और परम्परा है जिसमें क्षेत्र के लोगों विचार दृष्किोण संस्कृति और आर्थिक जीवन को हमेंशा ही परिवर्तित किया है। कृषि क्षेत्र की नियोजित सामाजिक आर्थिक विकास की सभी कार्यनीतियों का मूल है तथा इसका केन्द्र हमेंशा बनी रहेगी। कृषि के कारण क्षेत्र विशेष की सामाजिक आर्थिक गतिविधियां लगातार परिवर्तित होती है। क्यों कि कृषि के कारण क्षेत्र के काफी रोगो को रोजगार प्राप्त हो रहा है। जिससे उनके जीवन स्तर में लगातार बदलाव आ रहा है। वर्तमान में कृषि के उहुआयामी विकास तथा समृद्धि ने ही सामाजिक आर्थिक पक्षों के चहुमुखी विाकस में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक रहा है। सीकर जिले के विकास में भूमि उपयोग में कृषि की प्रधानता है क्यो कि यहां मानव की प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं में कृषि का सर्वाधिक महत्व है क्योकि आज भी लगभग ६० प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि व कृषि से सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न व आश्रित है। वर्तमान में यहां कृषि विकास के कारण यहां निवासित जनसंख्या की सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में लगातार परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वर्तमान में आ रहे परिवर्तन से आर्थिक विकास के तत्वों में भी खासा परिवर्तन आया है। औद्योगिककरण व नगरीकरण युग में कृषि विकास का स्तर लगातार उठता जा रहा है। वर्तमान में कृषि उत्पादों से सम्बन्धित उद्योगो का लगतार विकास होता जा रहा है। जिससे लगातार नये रोजगार अवसरों का सृजन हो रहा है। सीकर जिले में कृषि एवं उद्योगों पर परिवर्तन का असर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहां कृषि से सम्बंधित गतिविधियों में लगातार बदलाव आ रहा है।

परिचय

वर्तमान समय में परती भूमि पर प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों का सम्मिलित रूप से प्रभाव पड़ता है। लेकिन भौतिक कारक ज्यादा प्रभावशाली होते है, किन्तु मानवीय योगदान परती भूमि को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। कृषि ऐसी जीवन पद्धति और परम्परा है जिसमें क्षेत्र के लोगों विचार दृष्टिकोण, संस्कृति और आर्थिक जीवन को हमेशा ही परिवर्तित किया है। कृषि क्षेत्र की नियोजित सामाजिक आर्थिक विकास की सभी कार्यनीतियों का मूल है तथा इसका केन्द्र हमेशा बनी रहेगी। कृषि के कारण क्षेत्र विशेष की सामाजिक आर्थिक गतिविधियां लगातार परिवर्तित होती है। क्योंकि कृषि के कारण क्षेत्र के काफी लोगो को रोजगार प्राप्त हो रहा है। जिससे उनके जीवन स्तर में लगातार बदलाव आ रहा है। कृषि ऐसी जिवन पद्धति और परम्परा है जिसमें क्षेत्र के लोगों विचार दृष्किोण संस्कृति और आर्थिक जीवन को हमेंशा ही परिवर्तित किया है। कृषि क्षेत्र की नियोजित सामाजिक आर्थिक विकास की सभी कार्यनीतियों का मूल है तथा इसका केन्द्र हमेंशा बनी रहेगी। कृषि के कारण क्षेत्र विशेष की सामाजिक आर्थिक

गतिविधियां लगातार परिवर्तित होती है। क्यों कि कृषि के कारण क्षेत्र के काफी रोगो को रोजगार प्राप्त हो रहा है। जिससे उनके जीवन स्तर में लगातार बदलाव आ रहा है। वर्तमान में कृषि के उहुआयामी विकास तथा समृद्धि ने ही सामाजिक आर्थिक पक्षों के चहुमुखी विाकस में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक रहा है। सीकर जिले के विकास में भूमि उपयोग में कृषि की प्रधानता है क्यो कि यहां मानव की प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं में कृषि का सर्वाधिक महत्व है क्योकि आज भी लगभग ६० प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि व कृषि से सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न व आश्रित है। वर्तमान में यहां कृषि विकास के कारण यहां निवासित जनसंख्या की सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में लगातार परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

कृषि फसल प्रतिरूप :

फसल प्रतिरूप से अभिप्राय एक निश्चित समय अवधि के लिए बोई जाने वाल विभिन्न फसलों के बारे में वैकल्पिक निर्णय लेकर प्रत्येक फसल के बोए जाने वाले भू क्षेत्र का निर्धारण करना है। इसी आधार पर तीन फसल प्रतिरूप पाये जाते है। एक फसली प्रतिरूप : यह मुख्यत: वर्षा आधारित क्षेत्रों में पाया जाता है। द्वि फसल प्रतिरूप : इस प्रतिरूप में वर्ष में खरीफ व रबी की दो फसलें सिचाई साधनों के आधार पर ली जाती है। बहु फसली प्रतिरूप : इस प्रतिरूप में खरीफ व रबी के साथ जायद श्रेणी की फसल भी ली जाती है। जायद एक ग्रीष्म कालीन फसल है जो अप्रैल से जून तक ली जाती है।

वर्तमान में फसल प्रतिरूप में लगातार परिवर्तन देखा जा रहा है। फसल चक्र में फसल प्रतिरूप क्षेत्र विशेष की मृदा उर्वरकता सिंचाई के साधन एवं वैज्ञानिक विचार विमर्श पर निर्भर है। फसल प्रतिरूप की आवश्यकता स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर करती है। अगर स्थानीय परिस्थितियां (सिचाई साधनों की उपलब्धताए जलवायु, भूमि का उपजाऊपन, आर्थिक स्त्रोत आदि) अनुकूल है तो फसल प्रतिरूप में लगातार बदलाव देखा जा रहा है। वर्तमान विकसित युग में फसल प्रतिरूप लगातार बदलाव आ रहा है। सीकर जिले में वर्तमान द्वि फसली प्रतिरूप एवं बहु फसली प्रतिरूप की प्रधानता है। वर्तमान में सिंचाई की उपलब्धता, सिंचाई साधनों की विविधता, विभिन्न रासायनिक उर्वरक के प्रयोग से वर्ष भर में रबी, खरीफ एवं जायद फसलों की खेती एक साथ की जाने लगी है। जिससे कृषि का विकसित स्वरूप सामने आ रहा है। पिछले २० वर्षो में यह परिवर्तन काफी बड़े स्तर पर हो रहा है। पहले यहां मुख्यत ग्रामीण क्षेत्रों में एक-फसली प्रतिरूप ही पाया जाता था जो जीवन यापन हेतु की जाने वाली कृषि भी लेकिन वर्तमान में कृषि विकास से यहां की खेती की काया पलट कर दी है। आज इन ग्रामीण क्षेत्रों में द्वि फसली व बहु फसली कृषि प्रतिरूप पाया जाता है जिससे कृषकों की आय में लगातार वृद्धि हो रही है।

सिंचाई :

सिंचाई करके मानव कृषि भूमि से वाणिज्यिक एवं खाद्यान्न फसले जीवन स्तर में अभिवृद्धि करने के लिए उत्पादित करता है। सामान्यत वर्षा की अपर्याप्तता की दशा में फसल उत्पादन हेतु खेतों में कृत्रिम विधि से जल आपूर्ति करना सिंचाई कहते है। सिंचाई एक और मिट्टी में आर्द्रता की कमी को पूरा करके फसलों के विकास को सुरक्षा प्रदान करती है। अर्द्धशुष्क उच्च भूमि क्षेत्र भू-आवृतिक दशाओं के कारण न्यूनतम सिंचाई विकास के पक्ष में है। भारत में ईसा पूर्व भी सिंचाई के साधन प्रचलित थे। ईसा की दूसरी शताब्दी में चोल राजाओं ने कावेरी नदी पर ग्रांड एनिकट बांध का निर्माण सिंचाई के उद्देश्य से ही करवाया था। इसलिए विभिन्न धरातलीय व भूमिगत जल संसाधनों से मिट्टी की आर्द्रता की कमी को पूरा किया जाता है। यहां कृषि मे सिंचाई साधनों का प्रयोग लगातार बढता जा रहा हैं यहां सिंचाई के नये-नये साधनों व पद्धतियों द्वारा कृषि उत्पादन में लगातार वृद्धि की जा रही है जिससे कृषक का जीवन स्तर तेज गति से ऊपर उठ रहा है।

कृषि उत्पादकता :

कृषि उत्पादकता से कृषिगत फसलों के उत्पादन से है। वर्तमान समय बढती जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति को देखते हुए कृषि फसलों के उत्पादन को बढाने पर जोर दिया जा रहा है। ताकि जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। वर्तमान समय के आधुनिकीकरण एवं कृषि विकास के कृषि क्षेत्रों में न कि उत्पादन में वृद्धि हुई है बल्कि कृषि से सम्बंधित विविध पहलू भी प्रभावित हुये है। सीकर जिले में पिछले १० वर्षो के दौरान कृषिगत फसलों के उत्पादन में आशातीत परिवर्तन हुये है।

फसल विविधता :

फसल विविधता से सामान्यत अभिप्राय होता है फसलों को उगाने के क्रम में फेरबदल करना एवं अलग फसलों का उत्पादन करना। पहले किसानों द्वारा कृषि अपने जीवन यापन हेतु की जाती थी उस समय कृषि भूमि पर लगातार उन्ही फसलों का उत्पादन किया जाता था जो उनके भरण पोषण हेतु आवश्यक थी एवं लगातार एक ही फसलों के उत्पादन से मिट्टी की उपजाऊ क्षमता भी नष्ट हो जाती थी लेकिन जैसे-जैसे कृषि का विकास होता गया एवं नई-नई तकनीकों का आगमन हुआ फसलों में विविधता बढती गई। वर्तमान इन उन्नत तकनीकों का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान में कृषि जीवन यापन के साधन के साथ-साथ एक व्यवसाय का रूप ले चुकी है, जिसमें उन्नत तरीकों एवं तकनीकों के प्रयोग से कृषक ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा पाते है।

फसल गहनता :

बढ़ती आबादी को भोजन देने हेतु यह आवश्यक है कि भूमि के इकाई क्षेत्रफल में ज्यादा से ज्यादा फसले लगातार प्रति हैक्टेयर कुल पैदावार में वृद्धि की जाए। विभिन्न उर्वरक प्रयोग ने न केवल खाद्यान्न फसलों की उपज में वृद्धि की है बल्कि फसल गहनता को भी बढ़ाने में भरपूर योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त फसल गहनता में सिंचाई साधनों, उन्नत बीज व आधुनिक कृषि उपकरणों का भी योगदान रहा है। फसल गहनता से तात्पर्य उस फसल क्षेत्र से है जिस पर वर्ष में एक से अधिक फसल बोई जाती है अर्थात एक ही खेत में एक वर्ष में एक से अधिक फसलों की उत्पादन मात्रा से होता है। फसल गहनता फसली वर्ष में फसलों की आवृति का सूचक होती है।

ग्रामोद्योग में प्रगति :

वर्तमान काल में किसी क्षेत्र के विकास में वहां स्थित ग्रामीण उद्योगों का विकसित रूप मुख्य भूमिका निभाता है। क्योंकि गांवों को विकसित कर ही पूर्ण विकास के स्तर को प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समय में सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा गांवों में लघु उद्योगों को बढाया जा रहा है। क्योंकि ग्रमीण स्तर काफी प्रतिभाएं होती है जो इन छोटे-छोटे उद्योगों के माध्यम से ही बड़े उद्योगों तक पहुंच पाती है। सीकर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न लघु व सूक्ष्म उद्योगों का विकास किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। जहां उन्हे उद्योग को किस प्रकार विकसित किया जाए सिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न अन्य योजनाओं को शुरू किया गया है ताकि ग्रामीण स्तर पर लघु अद्योगों को बढाया जा सके। सीकर जिले में वर्तमान में ग्रामीण उद्योग का विकास काफी तीव्र गति से हो रहा है जिससे लोगों की आय में लगातार वृद्धि हो रही है।

जिले की आय में वृद्धि :

सीकर जिले में लगातार आर्थिक विकास के बढ़ते स्तर के साथ-साथ जिले की आय में लगातार वृद्धि हो रही है। जिले की आय में वृद्धि में सबसे बड़ा योगदान यहां के ग्रामीण क्षेत्रों का है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में लगातार परिवर्तन आ रहा है जिससे कृषिगत उत्पादन में वृद्धि हो रही है। कम कृषि भूमि में भी अधिक से अधिक उत्पादन हो रहा है जिस कारण यहाँ अन्य क्षेत्रों से कृषिगत उत्पादन क्रय नही करना पड़ता। जिससे जिले का आर्थिक लाभ बढता जा रहा है। इसी प्रकार सीकर जिले में खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ वाणिज्यिक फसलों की खेती भी बड़े पैमाने पर की जा रही है साथ ही फल व सब्जियों की खेती भी की जा रही है एवं इन कृषिगत उत्पादों को जिले से बाहर विक्रय हेतु भेजा जाता है जिससे जिले की आय में लगातार वृद्धि हो रही है। जिले में विकास के बढ़ते स्तर को देखते हुए यहां विभिन्न नये-नये उद्योगों का आगमन हो रहा है जिससे जिले की आर्थिक वृद्धि दर लगातार बढ़ती जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योगों एवं ग्रामोद्योगो के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति भी अच्छी हो रही है एवं ये उद्योग जिले की आय में लगातार वृद्धि कर रहे है।

रोजगार अवसरों का सृजन :

सीकर जिले के बढते विकास के कारण यहां विभिन्न क्षेत्रों में नये रोजगार अवसरों का सृजन हो रहा है। सीकर जिले के लगातार बढ़ते औद्योगिक विकास के चलते उद्योगों में नये रोजगार अवसर बन रहे है। सीकर जिले में ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामोद्योग के बढ़ते प्रचलन के कारण गांव के लोगों को पूर्ण या आंशिक रोजगार मिल रहा है। इसी प्रकार यहां लगातार निजी व्यवसायों की बढ़ती सघनता के कारण यहां के युवाओं को उचित रोजगार के अवसर प्रदान हो रहे हैं यहां

शिक्षा के क्षेत्र में निजी शिक्षण संस्थानों की संख्या लगातार बढ रही है जिस कारण यहां युवाओं को इस क्षेत्र में आगे बढने का पूरा अवसर मिल रहा है। सीकर जिले में आर्थिक विकास के कारण लोगों की आय बढ़ रही है जिस कारण उनकी आवश्यकताओं में भी परिवर्तन आ रहा है जिस कारण विभिन्न बाहरी क्षेत्रों के उद्योगों की रूचि इस क्षेत्र में बढ रही है। इसके चलते यहां के युवाओं के लिये रोजगार के नये अवसर बन रहे है यहां कृषि विकास के बढते स्तर के कारण कृषि के क्षेत्र में भी नये नये रोजगार के अवसर बन रहे है। अत: स्पष्ट है कि जिले के कृषि विकास एंव आर्थिक विकास के चलते यहां के युवाओ के रोजगार की सम्भावनाएं बढती जा रही है जो यहां निवासित युवाओं के लिय बेहतर खबर है एवं जिले की आय वृद्धि एवं विकास में सहायक होगी।

उच्च जीवन स्तर :

किसी भी क्षेत्र में आर्थिक विकास का स्तर अगर बढ़ता जा रहा है तो वहां निवासित लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा देखने का मिलेगा। सीकर जिले में लगातार हो रहे कृषि विकास एवं बढ़ते आर्थिक स्तर के कारण यहां निवासित लोगों की आय में लगातार वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में आ रहे नये-नये बदलाव के चलते कृषक खेती में कृषिगत उत्पादन को लगातार बढा रहा है जिससे उनकी आय में लगातार वृद्धि हो रही है जिससे वो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को आसानी से पूरा कर पा रहा है। सीकर जिले में वर्तमान में विभिन्न लघु, दीर्घ एवं ग्रामोद्योग की बढ़ती सघनता के चलते यहां रोजगार बढ रहा है जिससे यहाँ के लोगो के उच्च जीवन को बनाने में कृषि विकास का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लगातार कृषि में तकनीकी बदलाव व उन्नत पद्धतियों के चलते उत्पादन में वृद्धि हो रही है जिससे कृषकों की आय में बढ़ोतरी हुई है जिसके चलते यहाँ के लोगो की मूलभूत आवश्यकतायें परिवर्तित हो रही है जिसके चलते वो ज्यादा अच्छी वस्तुओं को उपयोग कर पा रहे है। अत: स्पष्ट है कि यहां के आर्थिक विकास के चलते यहां पर जीवन स्तर बढ़ रहा है यहाँ पर लोगों की आय लगातार बढ़ रही है जो जिले को आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध हो रही है।

शिक्षा का विकास :

सीकर जिले में साक्षरता दर के अनुसार आज भी महिलाये पुरूषों की अपेक्षा पीछे है जिसका एक मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की पुरानी रूढ़िवादी विचारधारा है। जिसमें महिला शिक्षा पर जोर नही दिया जाता है। लेकिन वर्तमान में ऐसी विचारधारायें लगातार कम हो रही है। सरकार महिला में शिक्षा का रूझान बढ़ाने के लिए कई योजनाएं क्रियान्वित कर रखी है और इन योजनाओं को सफल बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाये जा रहे है। जिससे महिला शिक्षा प्रतिशत को बढ़ाया जा सके। सीकर जिला शिक्षा की दृष्टि से अग्रणी जिला है। वर्तमान में यहां विद्यालयों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साथ ही उन विद्यालयों की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जा रहा है। विद्यालयों में समस्त संसाधनों की पूर्ति की जा रही है। ताकि शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाया जा सके। क्योंकि शिक्षा ही मानव के सामाजिक आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने में सक्षम है। वर्तमान में सीकर जिले में ग्रामीण स्तर पर सरकार की सबसे कारगर योजना सर्वशिक्षा अभियान रही है। जिसमें बालक-बालिकाओं को उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा मुफ्त दी जाती है एवं यह शिक्षा का अनिवार्य पहलू है। इस अभियान के कारण ग्रामीण स्तर पर उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा में भारी बदलाव देखा गया है। उच्च प्राथमिक स्तर के बाद की शिक्षा में भी सरकार द्वारा विभिन्न आर्थिक सहयोग प्रदान किये जाते है। जिसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में लगातार प्रगति देखने को मिल रही है। ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिस कारण पहले जो लोग गांव से बाहर जाकर शिक्षा लेते है एवं काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था वो वर्तमान में विद्यालयों की संख्या में वृद्धि से कम होती जा रही है एवं आर्थिक लाभ के कारण सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन स्पष्ट देखे जा रहे है। वर्तमान युग में शिक्षा का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। लोगो में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है वहीं सरकार के द्वारा भी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य :

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं मानव जीवन की मूल आवश्यकताओं मे से एक है वर्तमान मानव के उच्च जीवन स्तर को बनाने में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का महत्वपूर्ण भाग रहा है। पिछले १० वर्षों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का तीव्र विकास देखा गया है आज से १० वर्ष पहले जब चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का

विकास नही था तब ग्रामीण स्तर पर चिकित्सा के अभाव में मानवीय हानि अधिक होती थी क्यो कि ग्रामीण स्तर पर किसी भी प्रकार की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नही होती थी जिस कारण चिकित्सा के अभाव में बीमारियां बढ़ती ही रहती थी। इसके अलावा विभिन्न महामारियों का भी प्रकोप बना रहता था एवं विभिन्न महामारियों से मानवीय क्षति भी बहुत होती रही है। सीकर जिले में ग्रामीण स्तर पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के बढ़ते प्रभाव के कारण ही ग्रामीण स्तर पर लोगो के स्वास्थ्य का स्तर बढ़ रहा है। लोगो में बीमारियां लगातार घटती जा रही है। वर्तमान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास के कारण मृत्यु दर लगातार घटती जा रही है। एवं यहां व्यक्तियों की औसत आयु लगातार बढ़ती जा रही है। सीकर जिले में चिकित्सा सुविधा हेतु चिकित्सा संस्थाएं लगातार बढाई जा रही है।

पेयजल योजनाऐं :

सीकर जिले में वर्तमान में विभिन्न पेयजल योजनाएं सरकारी प्रयासों से कार्यरत है। सीकर जिले में ग्रामीण स्तर पर पेयजल योजनाओं की खासा जरूरत रहती है सीकर जिले में पहले पेयजल की काफी समस्याएं देखने को मिलती थी जिस कारण ग्रामीण जनंसख्या को काफी समस्याएं देखने को मिलती है जिस कारण ग्रामीण जनंसख्या को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था क्योकि गाँवों में व्यक्तियों एवं पशुओं को पीने के लिए पानी की आवश्यकता रहती है। वर्तमान आर्थिक विकास के चलते पेयजल समस्याएं धीरे-धीरे कम होती जा रही है। जिस कारण लोगों के जीवन स्तर में लगातार बदलाव देखा जा रहा है। सीकर जिले में वर्तमान में बढ़ते सामाजिक विकास से लोगों की जीवन शैली में लगातार परिवर्तन देखा जा रहा है। यह परिवर्तन ग्रामीण स्तर पर तेज गति से हो रहा है जिससे ग्रामीण विकास भी तेज गति से हो रहा है। सीकर जिले में समस्त तहसीलों में जलदाय विभाग के द्वारा विभिन्न पेयजल योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

सारांश

कृषि विकास से जिले में सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में काफी परिवर्तन आया है। सामाजिक-आर्थिक विकास के फलस्वरूप सामाजिक परम्पराओं में भी परिवर्तन हुआ है। सामाजिक रीति-रिवाजों, वेशभूषा, खाना-पाना, रहन-सहन आदि में भी परिवर्तन हो रहा है, इसलिए जिले में कृषि विकास व सामाजिक-आर्थिक पहलुओं की वास्तविक स्थिति ज्ञात करने की जिज्ञासा और बढ़ी है। किसी भी प्रदेश या क्षेत्र में बढ़ता हुआ कृषि विकास, समृद्धशीलता व कल्याणकारी कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए उस प्रदेश के सामाजिक आर्थिक परिवर्तन का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। जिले की अर्थ व्यवस्था का आधार स्तम्भ कृषि है। अतः भूमि और कृषि का महत्व बहुत अधिक है। भूमि का एक बड़ा हिस्सा खराब हालत में है। जिसे कृषि विकास द्वारा कृषि के उपयोग योग्य बनाया जा सकता है। कृषि ऐसी जिवन पद्धति और परम्परा है जिसमें क्षेत्र के लोगों विचार दृष्किोण संस्कृति और आर्थिक जीवन को हमेंशा ही परिवर्तित किया है। कृषि क्षेत्र की नियोजित सामाजिक आर्थिक विकास की सभी कार्यनीतियों का मूल है तथा इसका केन्द्र हमेंषा बनी रहेगी। कृषि के कारण क्षेत्र विशेष की सामाजिक आर्थिक गतिविधियां लगातार परिवर्तित होती है। क्यों कि कृषि के कारण क्षेत्र के काफी रोगो को रोजगार प्राप्त हो रहा है। जिससे उनके जीवन स्तर में लगातार बदलाव आ रहा है। वर्तमान में कृषि के उहुआयामी विकास तथा समृद्धि ने ही सामाजिक आर्थिक पक्षों के चहुमुखी विाकस में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक रहा है। सीकर जिले के विकास में भूमि उपयोग में कृषि की प्रधानता है क्यो कि यहां मानव की प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं में कृषि का सर्वाधिक महत्व है क्योकि आज भी लगभग ६० प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि व कृषि से सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न व आश्रित है। वर्तमान में यहां कृषि विकास के कारण यहां निवासित जनसंख्या की सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में लगातार परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Refrenes

1. अग्रवाल एम.डी. एवं ओ.पी. गुप्ता, (२०००) : भारत में आर्थिक पर्यावरण, रमेश बुक डिपो, जयपुर
2. अनिता एच.एस. (२००२) : एग्रीकल्चरल मार्केटिंग, मंगलदीप पब्लिकेशन्स, जयपुर
3. गुर्जर, आर.एस (२०००) : ''एग्रीकल्चर इकोलॉजी ऑफ शेखावाटी'' पी.एच.डी. थीसिस

4. राव, वाई.वी.कृष्णा (२०००) : न्यू चेलेन्जेज फसीना इंडियन एग्रीकल्चर, विश्लेन्द्र पब्लिसिंग हाऊस, एबीड्स, हैदराबाद
5. शफी, एम. (२००६) : एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, पियरसन ऐज्यूकेशन, नई दिल्ली रिर्पोट/अन्य प्रकाशन इत्यादि
6. शक्तावत, मोहनसिंह एवं अभय कुमार व्यास (२०००) : वैज्ञानिक फसल प्रबन्धन, यश पब्लिसिंग हाऊस, बीकानेर (राजस्थान)
7. तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी.एन. (२०००) : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहबाद
8. गोवडा, एन.के. (२००१) : एग्रीकल्चर डवल्पमेंट, युटीलिटी बुक्स

Reports/Peroodicals

१. सीकर जिले की जनगणना रूपरेखा (२०११) : जनगणना विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली
२. सीकर जिले का गजेटियर (Gazetter) (१९७७) : गजेटियर निर्देशालय, राजस्थान जयपुर
३. सीकर जिले की सांख्यिकीय रूपरेखा (२०१४) : आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, राजस्थान, जयपुर